B-384
L- 01
ETHICS

नीतिशास्त्र

मानव के आचरण / क्रियाकलाप / व्यवहार / ऐच्छिक कर्म से है (ऐसा कर्म जिसे इस सोच- समझकर किसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए करते हैं। इसका प्रभाव दूसरों पर पड़ता है। ऐसे कर्मों को सायास कर्म भी कहते हैं।

उचित या अनुचित के रूप में निर्धारण।

क्यों ? → सुखद मानवीय जीवन की स्थापना हेतु।

↓

व्यक्तिगत हित एवं सामाजिक हित में समन्वय स्थापित करने हेतु।

- नीतिशास्त्र वह नियामकीय या आदर्श मूलक विज्ञान है जिसमें -

(i) मानव के आचरण संबंधी नियमों, मानकों, मानदण्डों, मूल्यों आदि का निरूपण होता

है इनके आधार पर मानव के ऐच्छिक कर्मों / आचरण का मूल्यांकन किया जाता है (उचित / अनुचित के रूप में निर्धारण)।

(ii) व्यक्तिगत हित व सामाजिक हित में सामंजस्य स्थापित किया जा सके, शांति व व्यवस्था की स्थापना की जा सके, के साथ-साथ सुखद मानवीय जीवन की संभावना को साकारित किया जा सके।

नियामकीय विज्ञान (Normative Science) →

नीतिशास्त्र नियामकीय विज्ञान है।

किसी क्षेत्र विशेष का सुव्यवस्थित एवं क्रमबद्ध अध्ययन विज्ञान है।

विज्ञान के 2 आयाम हैं-

(i) भाषात्मक या वर्णात्मक या तथ्यात्मक या यथार्थमूलक - यथार्थ

यथा + अर्थ

ज्यों का त्यों वर्णन,
इसका संबंध 'है' से है } → यथा

घटनाओं की कारण परख व्याख्या → मर्मी

(ii) नियामकीय या आदर्श मूलक विज्ञान →

- इसका संबंध चाहिए से होता है,
- यहाँ मूल्यांकन किया जाता है,
- मूल्यांकन के आधारों या मानदण्डों की विवेचना,
- प्रयोजन परख व्याख्या।

नीतिशास्त्र एक नियामकीय विज्ञान है क्योंकि इसमें क्षेत्र विशेष का सुव्यवस्थित अध्ययन होता है इसमें मानव के ऐच्छिक कर्मों और जीवन की नैतिक समस्याओं एवं मुद्दों का व्यवस्थित एवं वस्तुनिष्ठ ढंग से अध्ययन किया जाता है परंतु नीतिशास्त्र वर्णनात्मक विज्ञान न

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform

होकर नियामकीय विज्ञान है। इसका संबंध 'है' से न होकर 'चाहिए' से होता है, इसमें मानव के क्रिया-कलापों का ज्यों का त्यों वर्णन न करके कुछ नियमों, नैतिक मानदण्डों, मूल्यों के आधार पर यह बताया जाता है कि क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए?

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

सामाजिक जीवन व्यतीत करने वाला सामान्य मानव →

ऐच्छिक कर्म

उचित
↓
नियम के अनुरूप
↓
करना चाहिए - कर्तव्य
↓
अभ्यास
↓
आदत
↓
चरित्र
↓
सच्चरित्र
↓
सद्गुणी

अनुचित के रूप में निर्धारण
↓
नहीं करना चाहिए
↓
अभ्यास
↓
आदत
↓
चरित्र
↓
दुश्चरित्र
↓
दुर्गुणी

जैसा चरित्र वैसा आचरण,
आचरण चरित्र का बाह्य पक्ष है,
आचरण को देखकर हम व्यक्ति के चरित्र का अनुमान करते हैं।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR